लाल रंग चाहैत अछि रोटी

लाल रंग चाहैत अछि रोटी

(काव्य संग्रह)

रामजी प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

LAL RANG CHAHAIT ACCHI ROTI
Anthology of Maithili Poems by Shri Ramji Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-55-1
सत्त्वाधिकार: © लेखक (श्री रामजी प्रसाद मण्डल)
पहिल संस्करण: 2023
दाम: 100/- (भा.रु.)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारीक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

दू आखर

आखर,

आखर केर समूह अछि शब्द

शब्दसँ वाक्य

शब्द वाक्यमे अर्थ भरैत अछि मनुक्ख

‘लाल रंग चाहैत अछि रोटी’

अछि अहाँक हाथमे

केहेन लागल

नूनगर, मिठगर आकि तीत

ई तँ अहीं कहब।

सादर..

- रामजी प्रसाद मण्डल

भाव

शब्दमे भाव भरब काज छल हम्मर
अर्थ आब अहाँ जानी की कहब हम

काव्य-क्रम

हम्मर लिलसा/09

भटकैत मन/11

नव-वर्ष/12

रावणकः आत्म सन्देश/14

अहल्याक आत्मालाप/17

की ई उचित अछि/19

सनातन/20

नख-शिख वर्णनः एक आर रूप/22

किछु मन उदास-खिन्न/25

बेघर कियो नहि/27

ऊच्च-मध्य आ निम्नवर्ग केतए अछि/28

मैथिलींगश: वियोग-रंग/30

गुरु-चरण: अशेष नमन/32

बुद्धिक गुमान आ ज्ञानक विनम्रता/33

कर्म-भक्ति-ज्ञानयोगसँ दूर मन/35

दल दलदलमे नेता ऊपर/38

भटकैत मन/40

कवि प्रेमक गीत किए गावै छी/42

पानि/44
लाल रंग चाहैत अछि रोटी/45
स्वाभिमानी/47
ऐनामे/49
शिशु-कंकालक मुरत/51
श्रमरत-कर्मरत नारी-स्वरूप/52
असमर्थ छी बेटीकेँ जन्म देबएमे/54
अजन्मा बेटीक मनुहार/56
श्रम-शक्ति/59
आगिक आकांक्षा/60

हम्मर लिलसा

चर्ख़क सफरसँ चक्कर लगा कऽ
हम आएल छी,
केत्तौ ठौर नहि भेटल
तँए घुमिकऽ धरतीपर आएल छी
अप्पन माटि मिठगर-नूनगर होइत अछि
यएह सोचि हम आएल छी।

मैथिल 'तरबियत'अछि
हमर
हम प्रेमक भूखल छी
मधुर-गान आ शौर्य-गीत
महाकवि 'कीर्तिलता'मे गौने छैथ
हिन्दी-साहित्य-आँगनमे 'कीर्तिलता'
चतरल-पसरल अछि
'कीर्तिपताका' साहित्याङ्गनमे
फहरा रहल अछि, लहरा रहल अछि।

हरिसिंह-लखिमाक प्रेमिल गीत
'पदावली'मे महाकवि गौने छैथ
'देसिल बयना सभ जन मिट्ठा'

महाकवि कहने छैथ
तत्सम अपभ्रंश देसिल-वयना
सभमे हमर काव्य-रचना अछि
मधु मिश्रित हमर बोली आ भाषामे
लोकहितक रचना अछि
शब्द ब्रह्म अछि
ई हम्मर पूर्वजक अक्षर मान्यता छैन
समयानुकूल शब्दक अर्थ होइत अछि
ई सभ गोटे जाने छी
भावानुकूल शब्दक प्रयोग करिकऽ
सागर-मे-गागर भरल
शब्द-सागर दुनियाँमे पसरल अछि
ओइमे हम स्नान कऽ ली
भाषाक समृद्धि हेतु
देशज-विदेशज शब्द किए ने हम अपना ली
हमर साहित्य जगत लोकप्रिय हो
एकरा हम किए ने अपनाबी? ❑

भटकैत मन

मने-मन घुमड़ै छी,
बरसै छी मने-मन।
कियो नहि भेटैत अछि
बरसु केकरापर हम।

मनेमे भटैक रहल छी
निकास नहि देखि पबै छी,
कियो बाट तँ देखाउ
निकसु केना हम।

सभ कियो प्रसन्नचित्त अछि
मनक कोहबरमे
सुन्नर बहुरिया भेटत जरूर
राति बीतेबा लेल।

मनक स्वप्न मनहिमे
हमरा सबहक
रहि जाइत अछि।

बिना प्रयत्न केने
यौ केकरा
सपना पूर्ण भेल अछि। ❑

नव-वर्ष

नव वर्षक नवल प्रहरकेँ
हम केना स्वीकार करू
मकर संक्रान्तिकेँ बिसैर
पछिमाहा सभ्यता किए
वरण करू।

करबद्ध नमन करै छी हे शिवशंकर!
दीनक दीनता हरू
असन-वसन संग आवासक
सम्यक दीनक लेल
बेवस्था करू।

हे भोलानाथ!
एकदिस अकूत सम्पदा
दोसर दिस अछि निर्धनता
ई केहेन अछि अन्याय अहीं कहू।

हे डमरूधर!
सुगन्धमे किए दुर्गन्ध मिश्रित अछि
हे हरिहर!

चहुदिस बहैत शीतल बसातमे
नेन्ना भुटका ठिठुरैत अछि
चुल्हि-चौका अछि शीतल
घरक घरनी भूखल
पड़ल अछि
ई केहेन नव वर्ष अछि हरिहर!

जन-मन अधिसंख्य रूसल अछि
एहेन दुरुह समयमे
हम नव-वर्ष किए मनाबै छी?
जाधैर समताक डमरू नहि बजत
ताधैर ई नव वर्ष रूप अधुरा अछि। ❑

रावणकः आत्म सन्देश

हम रावण छी
लंकेश लंकेश्वर
लंकाक अधिपति
हम दशानन छी।

हम ऋषि-पुत्र
उत्तम कूल पुलस्त्यक नाइत छी
वेदज्ञ, धर्मज्ञ, नीतिज्ञ आ संगीतज्ञमे
हम अग्रगण्य छी।

शिव भक्तिमे अग्र आ शिव-स्त्रोतक
हम प्रणेता छी
वलिमे महावली आ तीनू लोकमे
हम विजेता छी।

रक्ष-संस्कृतिक रक्षक
संरक्षक आ संयोजक छी हम
हमरे प्रतापसँ
लंकाक हर घर सोनक अछि
हमरे साम्राज्यमे

हर घर धन-धान्यसँ भरल पुरल अछि
कोठी कोठी अन्न भरल
दूध घीक धार बहैत अछि।

हमर सम्राज्यमे बाघ आ बकरी
एक घाटमे पानि पीबैत अछि

परंच...
आर्य-संस्कृति लेल मनभावन
नहि छी हम
आर्यक लेल दुष्कर्मी आ
पापक पुरोधा छी हम
मुदा...
हम दोषी छी
सोल्हन्नी दोषी...
किएक तँ देवी सीताकेँ जे हरण केलौं।

अहीं कहू
जेकर भगिनीक नाक काटि लेल गेल हो
जेकर प्रतिकार जँ कियो करए
तँ की दोषी अछि ओ
पर प्रतिकारक सजा हमरा देल गेल
वंश नाशक संग मौत

श्रीराम नहि केलैन हमर वंशज संग
एकोरत्ती करत ब्योत
आइ धरि हम प्रतिवर्ष
मरलोपर मारल जाइत रहल छी।

की ओ हमरा मारि सकैत अछि
हम तँ श्रीराम संग छी
हम जीवित छी
जन-जनमे
लोकक मनमे
लोकक प्राणमे
'रावणः लोक रावणः। ❑

अहल्याक आत्मालाप

हम छी अहल्या,
ऋषि गौतमक भार्या
शाप व्याप्त अछि तनमे
गौतमक शाप
चहुदिस व्याप्त
तन-मन आत्मा-प्राणमे।

जी रहल छी मिथिलाक बोन-खण्डमे
पाथर-सदृश
देखै छी हम निराशक बादैर
पसरल अछि चहुदिस
मनुक्ख के की कही
चिड़ै आ पशुओ नै अछि पासमे
हम आत्मग्लानिसँ पाथर बनि पड़ल छी घासमे
पंच-तत्त्व अछि संग ताहिसँ मरैत नहि जीवैत छी
अहीं कहू
किए हम सत्-युगसँ आइ धरि दोषी छी?
घन-अन्हारमे छल-बलसँ
बलात्कार करिकऽ कलंकित केलक
ओ दोषी, ओ बलत्कारी

सुख भोगि रहल अछि देव-लोकमे
आ हम किए रने-बोने झिझिआ रहल छी
असहाय या निस्संग..?

हम कुलाँच नै भरि सकै छी
बन-मनमे कुरंगक संग
गौतमक शाप
सहस्र योनि किए बनि गेल अछि बरदान?
सहस्र योनि बनि दमकैत अछि किए जगमे?
हमरा पाथर सदृश छोड़ि गेला ओ बनमे
अहाँ निर्मम किए बैसल छी
अपना-अपनी अपन लोकमे?
हे त्रिदेव, अहाँकेँ गोहराबै छी हम
अहीं इंसाफ करू
निर्दोषी रहितो हमहीं किए
दण्ड हम भोगि रहल छी?
की आगूओ अहिना भोगैत रहब
आ भोगत हमर सन्तान?
आकि आयुध लऽ रणमे उतरत
आगत हमर सन्तान। ❑

की ई उचित अछि

के अछि ओ जे अन्हारमे रहऽ चाहैत अछि?
के अछि ओ जे एकाकी रहए चाहैत अछि?
असगर मरि जाइत अछि सभकियो।
के अछि ओ जे अन्यायकेँ देखि
चुप रहि जाइत अछि
के अछि ओ जे अन्यायकेँ सहि
मौन रहि जाइत अछि
के अछि ओ जे अन्यायक
प्रतिकार करैत अछि
के अछि ओ जे सिद्धांतपर चलैत
बहुजन-हितमे मरैत अछि
के अछि ओ जे दीनक दीनतापर
लड़ि-लड़ि चलैत-मरैत अछि?
के अछि ओ जे अपन चरण-चिह्न छोड़ि
मरण सैय्यापर सुतैत अछि
आ
मातृभूमि हित प्राणोत्सर्ग कए
अ-नामे मरि जाइत अछि..! ❑

सनातन

सनातन-धर्मक प्रथम वर्ण
मनु सन्तानक प्रथम चरण।
अज्ञ-विज्ञ प्रथम मुनि ज्ञानी
अहाँ छी सदा स्व-अभिमानी।
मिथिलापर अहाँक असीम कृपा
अहाँ वेद उपनिषद् पुराण ज्ञाता।
याज्ञवल्क्य अयाची सन विद्वान
मिथिला-भूमिक अछि सुसन्तान।
सीता गार्गी अइ भूमिक उपज
ज्ञानी-विज्ञानी छल हमर पूर्वज।

आइयो भूतसँ कम नहि अछि ओ
ज्ञान व विज्ञानक हम छी संधानी।
आई.ए.एस; आई.पी.एस. अधिकारी
व्याख्याता, शिक्षक, राज्याधिकारी
वकील, जज अछि सभतर मैथिल
सुकर्मक अग्रज छी हम सभ मैथिल।
ब्राह्म-विधिसँ हम परिणय करै छी
मुदा शुभ-नियम नहि हम अपनौने छी।
यथाशक्ति देवक ब्राह्म-विधान अछि
मुदा, माँगै छी दहेज

की ई उचित अछि?
दऽ कऽ मनसँ दहेज बेटीकेँ विदा करी हम
मनसँ दऽ ब्राह्म-विधिक मान राखी हम। ❑

नख-शिख वर्णनः एक आर रूप

'तन्वी-श्यामा शिखर-दसना...'
हम नहि कहब
हम नहि कहब- 'अद्भुत एक अनुपम बागे'
नहि अछि कालिदासक कल्पना
नहि अछि सामन्ती-संस्कार
नहि अछि विद्यापतिक कवित्व-शक्ति
आ नइ अछि राजासँ सरोकार
हम छी सर्वहारा
हमर प्रतिमान अछि श्रमरत मजूरनी
जेकर देह अछि काजर सन कारी आ
चमकदार
जेकर एड़ीमे बेमाय आ छितराएल अछि
पैरक आँगुर
कटि अबस्स पातरपर नितम्ब अछि
भारी
उदर उभरल अति गहिंरगर अछि
ढोंरी
वक्ष-स्थल अछि पुष्ट भ्रमर सन
अति कारी

फाटल अंगियासँ झांकि रहल अछि
भरल जवानी
होठ अछि अति मोट गुल्लर सन
पियरगर
कपोल कारी अछि वन-जामुन सन
रसगर
नयन-कोर आमक फाँक आ चंचल
नयन डोका सन
दन्त पाँति मात करैत अछि
मेघक क्रोड़मे छिपल बिजली सन
प्रतिपल हरेक नजैर देखए चाहैत अछि
एक नजैर
माथपर अछि कारी मेघक छत्ता
बिनु सिनेहक
आ तैपर पजेबाक भार
निरन्तर डेगक चालि
हथिनीक समान
श्रमसीकर पीबिकऽ जीवैत अछि ओ
परिवारक लेल
ई सुन्नर सूरत अछि अप्पन
परिवारक लेल
आब अहाँ कहू
एहेन सुन्नर छवि मनभावन अछि
आकि नहि अछि?

जीवनक संग्राममे लड़ैत-भिड़ैत देखै छी
आकि नहि देखै छी? ❑

किछु मन उदास-खिन्न

पुसक राइत
कुहेसक अखाड़ा
अन्हारक राज
हाथसँ हाथ दूर
दिन भेल फुस्स।

कृषक-श्रमिक भाव शून्य
सभ रोटी-रोजी लेल बेहाल
महाजन अछि खुशहाल
महाजन अछि मालामाल।

माघक जाड़
हाड़क भीतर
माघक बयारमे
काँपि रहल छै जर्जर काया
हाड़मे जाड़क पीड़ा छाएल अछि
रात भारी
दिन हल्लुक
रविपर कुहेसक परदा
चाँदक चाँदनी मटमैल

शरद आ शिशिरक मिलन बिन्दु
मकर संक्रान्ति सन्धि-काल
परंच रोजीक लेल सांध्य-काल।

वसन्तक शुभागमन
पेड़-पौधा फल-फूल सबहक
तन-मन प्रफुल्ल
किछु मन आनन्दसँ उल्लसित अछि
अधिसंख्य मन उदास खिन्न
ठौरे-ठौर बौड़ रहल अछि
बौड़ाएल-बौड़ाएल
केत्तौ विपन्न विषन्न खिन्न
जर्जर कायामे मौन अछि
रोजी आ रोटीक तलाशमे
तँए हेतु पतझड़ अछि मनमे। ❑

बेघर कियो नहि

चारू दिशामे देवाल अछि
चारू कोण खिड़की व दरबज्जा
वास्तुक दृष्टिसँ शुचि व शुभ
नीलाकाश गृह-छत अछि।

धरती अहाँक पलंग अछि
हरियर दूभि फोमक ओछौना-बिछौना
ई गृह गरमीमे गर्म आ शरदमे ठण्ड रहैत अछि
बरसातमे कखनो गरम तँ कखनो ठण्डा
वसन्तमे समशीतोष्ण ए.सी. सन
ई घर अहाँकेँ केहेन लागल?
आराम करू विश्राम करू
ई घर अहींक अछि। ❑

ऊच्च-मध्य आ निम्नवर्ग केतए अछि

धर्म आ जातिक बाजारमे
अलग अलग दोकान अछि
'होल सेल'मे मुस्लिम इसाई पारसी केर
एक्के मुकाम अछि।

हिन्दू, बौद्ध, जैन आ सिखक
एकहि पैगाम अछि
इस्लामी दोकानमे शिया-सुन्नी वहाबी केर
पण्डाल सजल अछि।

बौद्धक दोकानमे हीनयान ओ महायानक
पण्डाल पसरल अछि
जैनक दोकानमे श्वेताम्बर-दिगम्बरक
पण्डाल लागल अछि
'होल सेल'मे अगड़ा-पिछड़ा आदिवासी-दलितक
फार्म अछि
अइ फार्ममे उपजातिक अलग-अलग
ठेलाबला अछि
हम पुछै छी
देशक रहबर सभसँ

कियो तँ ई जनकेँ बतलाबी
ऊच्च-मध्य-निम्न वर्ग
अइ समूहमे केतौ अछि? ❑

मैथिलींगश: वियोग-रंग

अहाँ डोर मैट नै छी कि पयर पोछि रूममे
प्रवेश करी
अहाँ हमर मनक क्विन छी
हृदयक सीटपर वैसल छी
पल पल हर क्षण अहींक ड्रिम
देखैत रहैत छी हम
प्रतिदिन नयनक कोरसँ डेट गनैत
रहै छी हम
ट्रस्ट करू हम प्रतिपल हरक्षण अहींक नाम
जपैत रहै छी
अहींक मूरत अछि हमर मनक टेम्पलमे
अहींक छवि अछि हमर हार्टक दर्पणमे
दिन-तारीख नजदीक आब आबि
गेल अछि
वियोगक दिनक आब दी इण्ड भऽ
गेल अछि
फगुआ-हुरदंगमे हम खेलब अहाँक संग
रंगक होरी
वाइन हम पिअब नै संग राखब
भांगक झोरी।

बिलिभ करू हमरापर आब नै जाएब अहाँकेँ
छोड़ि कऽ
कोरोना डरसँ नहि अहींक डरसँ हम नै
जाएब मुँह मोड़ि कऽ। ❑

गुरु-चरण: अशेष नमन

गुरुवर गुरुजन सभ रहैथ
सज्जन शिरोमणि,
श्री गुरु-पद-पंकजपर नत मस्तक मम
आशीष हेतु
गुरु-पादामृत श्री गंगाजलसँ
बेहतर व पवित्र
हम छी शिष्ट विनम्र तँ तुअसँ
शिक्षा पाबी
गुरुसँ ऋण-मुक्त नहि भऽ
पाओत हमर सातो जन्म
हम कुशल छी
अहाँक आशीर्वादसँ
अइ नश्वर धराधामपर।

अहाँक विनम्र छवि
हमर पथ-प्रशस्तक
मार्ग दर्शन करैत अछि
गुरुवर अहीं छी
अइ जगमे हमर अक्षय निधिक समान
श्री चरणपर अखनो हमर नत-मस्तक
अशेष-अर्घ्य-नमन-प्रणाम। ❑

बुद्धिक गुमान आ ज्ञानक विनम्रता

बुद्धिक गुमानमे मदमस्त अछि सभ
बाँटि रहल अछि अपन बुद्धि
एक-दोसराक बीच।

बुद्धिसँ चलबैत अछि अपन काम-धाम
बुद्धिक बलसँ कमा लैत अछि यशनाम
बुद्धि मात्र सम्बल अछि मनु-जीवनक,
ओ अनुगामी अछि अनाचारी दानवक।

ओ पथ प्रशस्त कऽ लेत अछि स्व-बुद्धिसँ
बलात्कारीक अनुचर अछि अपन बुद्धिसँ।

बुद्धि मन:चिन्तन अछि स्वार्थी मनुक्खक,
ओ मनु प्रबुद्ध अछि स्वामी भ्रष्टाचरणक।

बुद्धि अहंकार अछि उच्चपदस्थ मनुक्खक,
बुद्धिसँ शासित होइत अछि मासूम मनुक्ख।

ज्ञानक विनम्रता–
ज्ञान मनुक्ख-जीवनक सार-तत्व अछि

ज्ञान ईश्वर प्रदत्त वरदान अलंकार अछि।

ज्ञाता ज्ञेयक एकात्म स्वरूप ज्ञान अछि,
ज्ञानक अभावमे जीवन निस्सार अछि।

ज्ञानमे विवेकक बास ओ निवास अछि,
नीर क्षीरसँ पृथक ज्ञान कऽ सकैत अछि।

ज्ञानक अभावमे मनुक्ख पशु समान अछि,
ज्ञान विवेक संग मिल प्रज्ञाकेँ जगबैत अछि।

प्रज्ञाक जागरणसँ मानवेत्तर गुण बढ़ैत अछि,
मानव अपन गुण छोड़ि ईश गुण पबैत अछि। ❑

कर्म-भक्ति-ज्ञानयोगसँ दूर मन

कृष्ण!
तोहर आनन्दमय जन्मदिन
मनबैत छी हम सभ
तोहर गीता-वचनपर
चलए नहि चाहैत अछि कियो
निष्काम-कर्म-योग पढ़ै छी सभ
मुदा चलैत नहि अछि कियो
कुकर्म करै' छी दुनियाँ-जहानमे
सद्‌कर्म करैत नहि अछि कियो
कर्ममे मनोयोगकेँ आवश्यक
मानल गेल अछि
मुदा मनमे योग नहि
आ ने योगमे कर्मक जोग।
भोगक लेल कर्म
स्वार्थवश करैत रहैत अछि
अन्यायपूर्ण धनादिक चेष्टा
मन-कर्ममे समाहित अछि
समर्पणक अर्थ अछि
कर्म व भक्तिमे लीन भऽ जाएब
समर्पणक भावमे जन-मनकेँ

एकात्म भऽ जाएब
मुदा हम कर्म-भक्तिमे
समन्वय कहाँ कऽ पबै छी
दम्भ मान व मद-मोहसँ आबद्ध
मन की समर्पित अछि?
हम देहाशक्तिसँ मुक्त भऽ
भक्तिमे लीन कहाँ भऽ पबै छी
समर्पित होमए लेल कहने छह
कर्म भक्ति आओर ज्ञानमे
ध्यान धारण समाधिक एकाग्रता
अछि की जन-मनमे?
ज्ञाता ज्ञेयक तदात्मयक स्वरुप
भाषित होइत अछि ज्ञानमे
परंच ज्ञाता आओर ज्ञेयक समन्वित रूप
कहाँ झलकैत अछि जन-मनमे
ज्ञानक सोपान विवेकसँ
कोसो दूर अछि
ज्ञान हमर पथ-प्रदर्शक अछि
तथापि, हम मजबूर छी
बुद्धिसँ संचालित होइत अछि
हमर जीवन, तन आ मन
बुद्धिक बसमे हमर जीवन, तन आ मन
सभ कुमार्गी भऽ गेल अछि

कर्म, भक्ति व ज्ञानसँ शत योजन दूर छी
किए मनावैत छी तोहर जन्मदिन
मूढ़ मति हम
हम दूरसँ किए नमन करैत छी
कर्म भक्ति व ज्ञान रहित भऽ बेमनसँ। ❑

दल दलदलमे नेता ऊपर

सिद्धांत-विहीन दल दलदलमे
धँसल जाइत अछि
जाति-धर्मक कीचड़सँ
अभिषिक्त भऽ रहल लोग अछि
दलबदल मूल-मंत्र व शस्त्र
अछि आजुक नेता लेल
ओ बुझै छैथ देश-प्रदेशक
जनता अछि बुरबक-बकलेल।

जनता देखि रहल अछि
हुनकर नुरा-कुश्तीक खेल।
कुर्सी लेल ओ बेचि सकैत अछि
दल व परिवारिक मान-सम्मान
हुनका सभ लेल खेल खिलौना अछि
दल-सिद्धांत व आत्मिक ईमान।

आब जन गणकेँ सोचए पड़त
जाति-धर्मसँ ऊपर उठए पड़त
दलगत भावनामे जे ग्रसित अछि
सभकेँ ऊपर उठि भोँट दिअ पड़त

जे जन-मजदूर, किसानक लेल लड़ता

वएह छैथ हमर सच्चा-सुच्चा नेता
हम अपन मत हुनके देबैन वएह बनता
हमर रहबर प्रनेता। ❑

भटकैत मन

नदी-कछेरमे हम बैसि निहारि रहल छी
प्रबल प्रवाहित धारक धाराकेँ
नदीक उद्गम समागम सभ जानैत अछि
मुदा मनक गतिकेँ जानैत अछि कहाँ
हमर मन भटैक रहल अछि अन्तर्मनमे
हम खोजि रहल छी मनक कोन-कोनमे
मुदा मन समा गेल अछि
अन्तर्मनक गहन गह्वरमे
केतौ ठौर-ठेकान नहि अछि मनक
आवाराक भाँति भटकैत रहैए
मन एकाग्र नहि भऽ पबैए
तिल-तिल रहदम जलैत रहैए
आब अप्पन मन थाकि गेल
चलैत-चलैत, भागैत-भागैत।

दिलक सम्बन्ध रूहसँ अछि
आ मनक सम्बन्ध तनसँ
बुद्धिक सम्बन्ध तनसँ अछि
आ ज्ञानक सम्बन्ध रुहसँ
मन कहैए बुद्धिक बात मान
आ रूह कहैए ज्ञानक बात मान तूँ

मन भटकाबैत रहैए
ज्ञान राह देखबैत रहैए।

समाधिस्थ तनमन सोचए
तोँ तन-मन स्वार्थी बुद्धि
आ रूह ज्ञानक मध्य भटकैत अछि
मन, बुद्धि आ ज्ञानक मध्य
प्रबल प्रवाहमे भँसिया रहल अछि
केतौ ठौर-ठेकान नहि अछि मनक। ❑

कवि प्रेमक गीत किए गावै छी

मुसाहिब सभसँ दरबार सजल अछि
चमचा सभसँ हाटबाजार
मुसाहिब निशदिन गीत गबैत अछि
नेता मगन मस्त भऽ झूमि रहल अछि
कवि प्रेमक गीत किए गाबै छी।

भाषणसँ नेता राशन बाँटैत अछि
वादाक मिष्ठान बाँटि रहल अछि,
जे कबह से कहियो पूरा भऽ नहि सकत
अफसर रौबक शान दिखबैत अछि
कवि प्रेमक गीत किए गाबै छी।

चौका-चुल्हाकेँ शान्त देखै छी
नहि कहियो धुआँ उठैत देखै छी,
दिनक दिनसँ चुल्हा अछि बासि पड़ल
घरमे पसरल अछि चहुओर उदासी
कवि किए गीत गाबै छी प्रेमक।

बच्चा भूखसँ बिलैख रहल अछि
घर बैसल घरनी बाट तकैत अछि

कखन तक आओत बच्चाक बाबू
आस-निराशसँ मन अछि बेकाबू
कवि किए गीत गाबै छी प्रेमक।

अहाँ गबैत छी गीत अति सुन्नर
मन अहाँक अछि अति खनहन
ऊषा-किरणकेँ दियौ अहाँ हकार
चुल्हा जरत तखने भूखल पेट भरत
सहजहि सभ मनसँ मानत अहाँक उपकार
खनहन भऽ कऽ गाउ अहाँ प्रेमक गीत। ❑

पानि

पानि बरिस रहल अछि
पानि पानि भऽ रहल अछि लोग
मनुक्ख, पशु-पक्षी आ कीट-पंतग
खेत-खलिहान आ बाग-बगीचा
पेड़-पौधा आ घास-फूस
नद-नदी आ नाला-नाली सभ
सभठाम पानिसँ सराबोर अछि
सभकिछु पानिसँ अछि भरल
पानि बिनु ने कियो रहल अछि
आ ने रहि सकैत अछि
मुदा हम पूर्ण रूपसँ कहि सकैत छी
बिनु 'पानि' राजनेता रहि सकैत अछि।
ईश्वरक कसम..! ❑

लाल रंग चाहैत अछि रोटी

वर्षाक बूनमे
तालाबक भींडामे
नदीक मध्य सागरक गहराइमे
सभठाम खोजि रहल अछि रोटी।

पहाड़क ऊँचाइपर
वियावान वनमे
खेत-खलिहानमे
ईंटक भट्टा-चिमनीमे
सभ खोजि रहल अछि रोटी।

कल-कारखानामे
साहुकारक दोकानमे
सेठक दरबज्जामे
जमींदारक दरबारमे
सभ खोजि रहल अछि रोटी।

नौ-सेना सागर तल
थल सेना स्थलमे
नभक ऊँचाइपर

मरुभूमिक जंगमे
सभ खोजि रहल अछि रोटी।

रोटी अछि संसद सांसदक भाषणमे
दलक दलदल-सिद्धान्त मिथ्या नारामे
नेतृत्व नूका-छिपा रहल अछि रोटी।

रोटी जँ चाहैत छी
भगतसिंहकेँ मोन पाडू
लालवसन धारणक प्रबल हूंकार भडू
बदलैत समयक संग-साथ चलू
सबहक बीच सभकेँ अप्पन बुझू
तँए, माँगि रहल अछि रोटी। ❑

स्वाभिमानी

आत्मा बेचि जे शान से जीबैत अछि
पीज़ा-बड़गर-मालपुआ खाइत अछि
आरामसँ रहैत अछि
डनलपपर सुतैत अछि
मजलूमक रोटीसँ खेलैत अछि
चमचाक जीवन जीबैत अछि
वो आत्महीन बेरहम बेजान
जिन्दगी जीबैत अछि।

मुदा जे बेचैत नै आत्माकेँ
ओ दुर्दिनमे जीबैत अछि
ईमानपर चलैत अछि
बेईमान कहल जाइत अछि।

रोटीक लेल ललाइत अछि
मुदा स्वाभिमान ओ शानसँ जीबैत अछि
सीकर पीब कऽ जीबैत रहैत अछि
ओ बेकती आत्माभिमानी
समय-शीलापर अपन अनाम नाम
लिख दैत अछि

वएह अनामक नामकेँ
हमर शत-शत नमन, शत कोटि प्रणाम। ❑

ऐनामे

स्वतंत्र तँ भेलौं
मुदा समता बन्धुत्व भेटल कहाँ?
भेटल नहि अधिसंख्य लोककेँ
भोजन, वसन आ आवास
आयुष आ शिक्षा-समान
अवसर व विकास
भरल नहि ऊँच-नीच
आ धनवान निर्धनताक खाधि।

एतए अछि जाति-धर्मक बाड़ा-घेरा
एतए घिरल अछि संविधानक मूल आत्मा
जाति-धर्मक जहलमे
संविधानक मुक्ति लेल
चलाबए पड़त कोदण्ड
हम राजधर्मपर चलैत छी
मुदा अछि राजदण्ड एतए पंगु व उदण्ड
जाति आ धर्ममे शोषित के आ शोषक के
ई नहि जानैत अछि कियो
जाति आ धर्मक सीढ़ी चढ़ि बेकती
आगू बढ़ि जाइत अछि

निर्धन रहि जाइत अछि पाछू।
की 75म अकिंचनतासँ मुक्ति पाएब
रवि-किरण आ चाँद-ज्योत्स्नामे सुख पाएब । ❑

शिशु-कंकालक मुरत

फाटल-पुरान जींस पहीरि कऽ
मानवक छोट-छीन बच्चा
खोजि रहल प्लास्टिकक कचरा
शीशी-बोतल थैला-थैली आ डिब्बा
प्लास्टिक पत्तल आ टुकड़ा-टुकड़ी
प्लास्टिक बोरामे
सहेज कऽ रखैत जाइत अछि
कचराक डिब्बामे जँ
किछु खाद्य वस्तु भेटै छै
तँ केत्तौ बैस ओ खा लैत अछि
किछु सहेज कऽ राखि लैत अछि
नर-कंकालक जिबित मुरत
निर्धनताक दयनीय सूरत। ❑

श्रमरत-कर्मरत नारी-स्वरूप

धूपक दुपहरियामे कारी मुख-मण्डलसँ
स्वेदज बून ढरैक रहल अछि
मुखपर अछि घाम-पानि
झलमल झलमलाइत।

यौवनक भारसँ गठित गठीला तन-मन
चमचम अछि चमकैत
श्रमसँ श्रमित क्लान्त तन-मन
कथमपि नहि श्रम-साधनाक संग
तन घामसँ स्नान करैत अछि।

श्रम-स्वेदजसँ अंग-अंग संग
अंगिया-चोली भींजल अछि
घामसँ भींजल अंगिया-चोली संग
अंग-वस्त्र सटल अछि छाती-पीठ आ तनमे
भरैत रहैए अंगिया-चोली हरदम
प्रबल उछाह मनमे।

मर-मजूरी कऽ राखब हम जीवनकेँ
जीवन्त जीवन तब नहि भार बनत

हम रहब सदैव सुखान्त
दुपहरियाक रौद अछि
जीवनक लेल श्रृंगार।

ईंटाक भार लगैए हमरा
फूलक सम भार
साँझ होइत मजूरी भेटत
घर जाएब सम्हारब घरक काज।

भोजनक पछाति नीन आएत
सुखक नीनमे सुति जाएब
हमहूँ छी मिथिलाक सन्तान
हमहूँ छी यौ मनुक सन्तान। ❑

असमर्थ छी बेटीकेँ जन्म देबएमे

किए जनम लेल गोढ़ियाबै छी अहाँ
ई सम्भव नइ अछि हमरा लेल
हम जनमिकऽ देखि लेलौं
ऐ सांसारिक बेवस्थाकेँ
जीवन भरि झुलसैत रहलौं हम
ऐ सामाजिक बेवस्थामे।

नइ चाहै छी अहाँकेँ जिल्लत
जहालतक दी व्यथा
मर्म व्यथा केकरासँ कहब
के सुनत एहेन सन कथा
जीवन-जंजालसँ हम दुखी छी
ऐ सामाजिक बेवस्थामे
एतए प्रतिपल प्रतिक्षण स्त्री मरैत अछि
ऐ क्रूर बेवस्थामे।

केतौ ममतामे मरैत अछि नारी
केतौ सदेह मरैत अछि बेचारी
ऊषाकालसँ सांध्या काल धरि
मरैत रहैत अछि नारी-बेचारी

भावनाक सागरक हिलोरमे
मरैत रहैत अछि नारी
माइक ममता बहिनक सिनेह
आर पत्नीक प्रेममे डुमिकऽ
जीवन भरि समग्र सम्बन्धसँ
एकात्म भाव बनल रहिकऽ
मुदा भेटै छै जिनगी भरि
उपेक्षा-तिरस्कार आ अपमानक मोटरी
ऐ स्थितमे की जीब सकै छी
अहाँ नन्ही हमर लाडली
सभ बेटा लेल ललाइत अछि
बेटी सम्हारत के?
बेटीक जन्मपर
फूलक थारी बजाओत के?
बेटीक जन्मपर
मंगल-गान गाओत के? ❑

अजन्मा बेटीक मनुहार

जन्मए दू न माँ
बेटी छी तँ की भेल
छी तँ हम अहींक सन्तान
हमर-तोहर एकहि संग जन्म होयत
हम बेटी कहाएब आ अहाँ माँ
जन्मए दे न माँ।

हम वचन दइ छी माँ
सीताक सतीत्व
राधाक अमर प्रेमक
प्रतीक बनब हम
सती अनुसुइया जकाँ
ब्रह्मा-विष्णु महेशक शिशु बना
पालनामे झूलाएब हम।

दौपदी जकाँ अन्याय कथमपि
सहन नहि करब हम
कौरवोकेँ सर्वनाश कऽ आलम्बन बनब हम
जन्मए दू न माँ
हम पुनः वचन दैत छी अहाँकेँ माँ।

कल्पना चावलक समान
आकाशमे पलंग बिछा कऽ
तोहर नाम रौशन करब हम
किरण बेदीक समान किरान बनि
आइ.पी.एस.क मान बढ़ाएब हम
हेमा दास बनि कऽ
दौड़ लगा कऽ
स्वर्ण-पदक लाबि
तोहर श्रृंगार करब हम।

अमीषा पटेलक समान
हिमगिरिक शिखर एवरेस्टपर चढ़ि
तिरंगा फहरायब हम
जल-थल व नभमे बेटियो अपना
परचम फहरौलक अछि
ओ सभक चरण-चिह्नपर चलि कऽ
तोहर अभिषेक करब हम।

हम जानै छी अहाँ दहेज-लोभीक डरसँ
जन्मए नहि देबए चाहै छी हमरा
हम वचन दइ छी अहाँकेँ
ब्रह्मचारिणी-रूप धारण करिकऽ

हुनक विकास रोकि देब
जन्मए दू न जगत कल्याणी
आदि शक्ति काली दुर्गा महारानी। ❑

श्रम-शक्ति

कल्पनामे यथार्थक सृजन करैत अछि
श्रमिक अप्पन पक्षमे
श्रमरत श्रमिक मोड़ैत अछि दिशाक मुँह
अप्पन पक्षमे
श्रम सीकर पीब
मतवाला भऽ जाइत अछि ओ
धरतीक सीना फारि अन्न उपजाबैत अछि
जनहितक लेल ओ
कर्मठ सैनिक धूलमे लुंठित मुकुट
सिरपर धारण कऽ लेत अछि
श्रमरत श्रमिक जार-वंशजकेँ
लाल कफन ओढ़ा दैत अछि
जीवनक हर क्षण प्रतिपलमे
श्रमक महत्ता व समता आंकू
श्रमकेँ सीकरसँ सिंचित
समयक गतिकेँ पहिचानू
समय साथ दैत अछि ओकरा
जेकरामे आत्मबलक शक्ति अछि
वएह दिशाक मुख मोड़ि सकैत अछि
जेकरामे स्वाभिमानक सम्बल अछि। ❑

आगिक आकांक्षा

दीनक दिमागमे रेत पसरल अछि
रेतमे उगैत अछि मृगमरीचिका
मृगतृष्णाक सागरमे
लिलसाक लहरि कहाँ
उठैत अछि भूखक भँवर
चानक वृत्तमे रोटी
रोटीपर नूनक लिलसा
आर किछु नहि
वसन विहीन निर्धन हृदयक कपाट खोलि
खोजैत अछि पलाशसँ आगि
बरसत कहिया?

❑❑❑
❑❑
❑

Notes